Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

वैश्वीकरण और नारी आत्मनिर्भरता : एक विश्लेषण

मन्जू रानी, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान

डॉ. धीरज बाकोलिया, शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग, गवर्नमेंट लोहिया कॉलेज, चुरू, राजस्थान

शोध सार

20वीं शताब्दी की एक प्रमुख घटना है – वैश्वीकरण। इसके अंतर्गत आतंकवाद, पर्यावरण, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि विषयों के साथ–साथ नारी विमर्श जैसे ज्वलंत विषय का भी अध्ययन किया जा रहा है। नारी विमर्श सिर्फ एक देश की सीमाओं तक की सीमित नहीं है बल्कि वैश्विक स्तर पर नारी सशक्तिकरण के लिए प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। पाश्चात्य देशों में नारी स्वतंत्रता के लिए अनेक आंदोलन हुए। संचार साधनों, पूंजीवाद तथा बाजारीकरण ने जहां नारी को आत्मनिर्भर तो बनाया परंतु उसके अस्तित्व पर आज भी प्रश्न चिन्ह लगे हुए हैं।

संवैधानिक व सामाजिक अधिकार स्त्री को पुरुष के समान ही प्राप्त है परंतु आज भी नारी को अपने जीवन पर अधिकार प्राप्त नहीं है वह अपने जीवन का निर्णय स्वयं नहीं ले सकती है। नारी की स्वतंत्रता आज भी अधूरी ही दिखाई देती है। एक नारी के बिना ना तो घर परिवार चलता है और ना ही सृष्टि का संचालन होता है फिर भी घर परिवार और समाज द्वारा वह हाशिए की तरफ ही धकेली जाती है। सामाजिक जीवन मूल्यों का महत्व स्त्री और पुरुष दोनों के लिए ही समान होता है परंतु फिर भी पुरुष प्रधान समाज पुरुष को तो स्वतंत्र रखता है और स्त्री को बेडियो में जकड़े रहता है। समाज की परंपरागत मान्यताएं अपने आप नहीं बदलती इन्हें बदलने के लिए आवाज उठानी पड़ती है इनके विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है पर आज भी नारी का सबसे बड़ा दुश्मन उसका डर है। अपने इसी डर को खत्म कर अपने विवेक व साहस से ही नारी को समाज के इन परंपरागत बंधनों से छुटकारा मिल पाएगा । वैश्वीकरण से सूचना क्रांति, शिक्षा का प्रचार प्रसार और रोजगार के नए क्षेत्र का सृजन हो रहा है जिनके फलस्वरूप आज नारी स्वयं को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र अनुभव कर रही है। अभी भी उसे अपनी हिम्मत और हौसलों के साथ पुरुष प्रधान समाज में अपनी स्वतंत्र पहचान बनानी है तभी वह उन्नति के शिखर को छू सकेगी।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

शब्दावली – वैश्वीकरण, नारी विमर्श, पूंजीवाद, परंपरागत मान्यताएं, संघर्ष, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता।

वैश्वीकरण एक सुव्यवस्थित अवधारणा के रूप में 20वीं शताब्दी के अंत में उभरकर सामने आया। वैश्वीकरण ने विश्व की जनसंख्या को तो द्रुतगति से बढ़ते हुए संचार तकनीक के द्वारा जोड़कर विश्व को एक परिवार के समान कर दिया है वैसे तो वैश्वीकरण का प्रारंभ प्राचीन काल में ही हो गया था उसे समय धर्म परस्पर जोड़ने का माध्यम था। भारत के अशोक धर्म का प्रचार हो, इसाई मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार या फिर इस्लामिक आक्रांताओं द्वारा इस्लाम धर्म का प्रचार हो प्राचीन समय में धर्म ही एक साम्राज्य को दूसरे साम्राज्य से जोड़ने वह परस्पर प्रभावित करने में अहम भूमिका निभा रहा था।

20वीं शताब्दी के अंत में दुनिया में आर्थिक मंदी आई और उदारीकरण का दौर शुरू हुआ साथ ही अंतरराष्ट्रीय समस्याएं विश्व पटल पर उभर कर सामने आई। आतंकवाद, पर्यावरण की समस्या, ग्लोबल वार्मिंग, बेरोजगारी, नारीवाद इन समस्याओं ने विश्व के देशों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया जिसके परिणाम स्वरुप वैश्वीकरण का और अधिक विस्तार हुआ। अब राष्ट्र राज्य की अवधारणा अंतरराष्ट्रीयतावाद की अवधारणा में परिवर्तित होनी प्रारंभ हो गई। लोकतांत्रिक व लोक कल्याणकारी शासन व्यवस्थाओं के साथ–साथ विश्व में लगातार सामानता प्रधान समाज की मांग उठाई गई। विश्व के कई राष्ट्रों में इसके लिए विभिन्न आंदोलन चलाए गए। लैगिक सामानता, नारी अधिकारो के मुद्दो का इन आन्दोलनो मे उठाया गया। वैश्वीकरण के दौर स्त्री –पुरुष समानता पर आधारित आन्दोलन का स्वरुप एक देश की सरहद से निकल कर विश्व स्तर पर आ गया। साहित्यिक रचनाओं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों पर लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय नारी अधिकारों आदि मुद्दों को प्रधानता दी गई।

वैश्वीकरण से नारी पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव हुए है। इनमें जहां कुछ नारियों ने उन्नति के शिखर को छुआ है वहीं कुछ नारियों को गर्त में भी धकेला गया है। वैश्वीकरण ने पुरुषों के साथ–साथ नारी को भी देश की आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक उन्नति में सहभागी बनने के लिए प्रयास किए हैं। रोजगार के नए–नए क्षेत्र का निर्माण होने से नारी को विकास और उन्नति के अवसर मिले जिससे वह स्वयं को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र अनुभव कर विकास की सहभागी बन रही है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

इस समय हुई संचार क्राति ने विश्व को एक परिवार का रुप दे दिया। टविटर, फेसबुक, इस्टाग्राम, व्हाट्सएप, मोबाइल फोन व स्मार्टफोन के माध्यम से पूरी दुनिया की सूचनाएं हमें तत्काल प्राप्त होने लगी। वैश्वीकरण से एक देश कार्य कुशलता व शक्ति विश्व के दूसरे देशों की कार्य कुशलता व शक्ति से तुलना करना संभव बना दिया। जब परस्पर दो देशों की तुलना होती है तो उनमें परस्पर सहयोग की भी शुरुआत होती है। उनमें परस्पर आदान–प्रदान से परस्पर लाभ भी संभव हो जाता है। वैश्वीकरण ने जहां एक तरफ पूरे विश्व के बाजारों को एकीकृत कर दिया वहीं दूसरी तरफ विश्व अर्थ व्यवस्था पर अमेरिका के वर्चस्व को और अधिक बढ़ा दिया। मजबूत देश और अधिक मजबूत बन गए। कमजोर देश के सामने तो उनके अस्तित्व का ही संकट मंडराने लगा। किसानों, गरीबो, दलितो, श्रमिको, अल्पसंख्यकों फिर नारी की तो बिसात ही क्या है वह तो पिछड़ी है और विकास के मार्ग में सबसे अन्त मे खडी हुई हैं।

भारतीय समाज विभिन्नताओ वाला समाज है जहां अनेकों जाति, भाषा, क्षेत्र, धर्म, रीतिरिवाजों व परम्पराओ का मिश्रण पाया जाता है। विश्व के अन्य देशों के समान भारतीय समाज भी पितृसत्तात्मक समाज है इसमें धार्मिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में तो नारी को देवी का दर्जा दिया जाता है परंतु यथार्थ में नारी की स्थिति घर परिवार व समाज में दोयम दर्जे की है। भारतीय नारी में शिक्षा का अभाव है और आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक संरचनाओं में उनकी सहभागिता भी काफी कम पाई जाती है लैंगिक असमानताओं के कारण समाज में भी उनकी स्थिति निम्न है।

भारतीय महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में वैश्वीकरण के फलस्वरुप सुधार हुआ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के भारत में आने से रोजगार के अवसर बढ़े युवाओं के साथ–साथ रोजगारों में नारी की संख्या भी पहले से काफी बढ़ गई है। विकास के प्रयासों के बाद भी भारतीय नारी पर इसका नकारात्मक प्रभाव भी रहा है। वैश्वीकरण ने कम वेतन, अंशकालिक और शोषणकारी नौकरियों की संख्या अब महिलाओं के लिए बढ़ा दी है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अब महिलाओं का वस्तुकरण कर दिया है। वस्तु प्रदर्शन के समान ही अब नारी भी प्रदर्शन का एक जरिया बन गई है कंम्पनियां अपने उत्पादों की बिक्री को बढ़ाने के लिए महिलाओं को प्रस्तुत कर रही है।

वैश्वीकरण ने अनौपचारिक और असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को रोजगार के असीम अवसर प्रदान किए हैं भारत में कुल श्रमिकों में से लगभग 30 प्रतिशत महिला श्रमिक है जो नारी अभी तक घर परिवार बच्चों की देखभाल में लगी रहती थी उन्हें

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

अब श्रम प्रधान इन इकाइयों में काम करने का अवसर मिला लेकिन इन रोजगारों में महिलाओं से उनके बुनियादी अधिकार भी छीन लिए हैं।

खुले बाजारों की उपभोक्ता संस्कृति का भी प्रभाव नारी पर पड़ा है इन क्षेत्रों में ना ही तो पर्याप्त वेतन मिलता है ना ही काम करने के कोई निश्चित घंटे होते हैं, ना कोई नौकरी की सुरक्षा है, ना ही सामाजिक सुरक्षा है, कार्यस्थल का माहौल भी असुरक्षित होता है इन क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं के शोषण की संभावनाएं भी बहुत अधिक होती हैं। मानसिक व शारीरिक थकान, तनाव, काम करने का लम्बा समय महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक के होने के साथ–साथ ये पारिवारिक व सामाजिक संबंधों के लिए भी हानिकारक होता है। खुले बाजारों की इस उपभोक्ता संस्कृति ने बड़े शहरों से लेकर छोटे शहरों, कस्बे तक की महिलाओं को एक तरफ उपभोक्ता तो दूसरी तरफ उत्पादक बनाने का काम भी किया है। उद्योगों में काम करने वाली महिलाएं वस्तु की बिक्री के लिए अधिक कीमत की मांग करती है परंतु उसे वस्तु को खरीदने वाली महिला उस वस्तु को कम कीमत में खरीदना चाहती है जिससे दोनों महिलाओं के आपसी हितो के बीच टकराव पैदा होगा जिसके परिणाम स्वरुप उपभोक्ता और उत्पादक के बीच परस्पर संबंधों में तनाव आएगा जो महिलाओं की परस्पर एकता में रुकावट बनकर खड़ा हो जाता है।

वैश्वीकरण के महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव भी हुए हैं। सांस्कृतिक आदान–प्रदान, संचार साधनो, मिडिया और विश्व स्तरीय संस्थाओ के भारत में आगमन ने महिलाओं को समान अवसर और अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने का काम भी किया है। जो शिक्षा उन्हें पहले मुश्किल से भी प्राप्त नहीं होती थी वह शिक्षा उन्हें आसानी से प्राप्त होने लगी है। तकनीकी उपकरणों की सहायता से अब वह विश्व के बारे में ज्ञान रखने लगी है जिससे वह घर के बाहर की समस्याओं के समाधान में भी अपनी बुद्धि व कौशल का प्रयोग करती है। शिक्षा प्राप्त कर नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व स्वतंत्र हो गई है समाज में नारी की सामाजिक स्थिति सुदृढ हुई और उसके सम्मान व प्रतिष्ठा में भी बढ़ोतरी हुई है। अब भारतीय नारी अबला नारी ना बनकर साबला नारी बनकर सामाजिक व्यवस्था का एक अहम अंग बन गई है। नए–नए क्षेत्रो का विकास होने से नारी अब प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कार्य कुशलता का परचम लहरा रही है।

राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, अंतरिक्ष, खेलकूद, मीडिया आदि विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए इन महिलाओं का घर परिवार और कार्यस्थल पर शोषण होता है। काम की अनिश्चितंता के चलते महिलाएं अपनी क्षमता

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

से ज्यादा काम करती है। वैश्वीकरण ने जहां एक तरफ विकास के नए आयाम बनाए वहीं दूसरी तरफ लाभ के असमान वितरण से आर्थिक असमानता में भी बढ़ोतरी हुई है।

वैश्वीकरण से महिलाओं को अनगिनत लाभ भी हुए हैं नारी अपने सामाजिक व कानूनी अधिकारों से अवगत हुई है। आर्थिक, स्वतंत्रता, व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता में बढ़ोतरी हुई है जिससे नारी में एक नये जोश, आशा और विश्वास का संचार हुआ है। अपने भविष्य निर्णय, व्यवसाय का चुनाव, विवाह करना या ना करना जैसे निर्णय स्वयं लेने लगी है वैश्वीकरण की प्रक्रिया नारी के लिए उस तलवार के समान है जिसकें दोनो तरफ तेजधार है जिसमें एक तरफ खुला आसमान उसके उज्जवल भविष्य के लिए बाहे फैलाए खड़ा है तो दूसरी तरफ घोर घना काला अंधियारा है जो उसे अपने में समेट लेना चाहता है।

शिक्षा और व्यापार ने महिलाओं के लिए आय के साधन सरल कर दिए हैं। जिससे नारी की आर्थिक स्वतंत्रता वह आत्म सम्मान में वृद्धि हुई है। उद्योगो, कारखानों व अन्य सेवा के क्षेत्र में जाने के अवसर बढे हैं अधिक ऊंची आय वाले क्षेत्रों में भी उन्हें अपनी कौशल व निपुणता दिखाने का अवसर मिल रहा है। नौकरी के साथ–साथ आधुनिक नारी अपने ज्ञान व विवेक से स्वयं उद्यमी भी बनी हुई है उसमें आत्मविश्वास और आत्म गौरव स्पष्ट दिखाई देता है। कुछ नारियां जहां बुलंद ऊंचाइयों को छू रही है वही यह भी यर्थात सत्य है कि आज भी नारी असुरक्षित वातावरण में कम मजदूरी पर भी काम कर रही हैं। यह संस्थाएं महिलाओं की आवश्यकताओ के प्रति आज भी आंख बंद किए हुए हैं। गर्भावस्था व बच्चों के पालन पोषण में महिलाओं को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी कठिन परिस्थितियों में वह स्वयं को एकदम अकेला महसूस करती है।

वैश्वीकरण से नारी पर दोगुना भार आ गया है समय के परिवर्तन ने उसे घर के बाहर तो लाकर खड़ा कर दिया है जहां वह अपने ज्ञान व कार्य कुशलता के अनुरूप कार्य कर रही है पर इसके साथ घर परिवार बच्चों के पालन पोषण के सारे काम भी उसे ही करने पड़ते हैं। कार्यस्थल का कार्यभार और घर का कार्यभार इन दोनों में निरंतर सामंजस्य बिठाने की दवाब में नारी के मानसिक व शारीरिक क्षमता पर भी प्रभाव पड़ा है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अभी भी बहुत प्रयास किए जाने की आवश्यकता है जिससे नारी की स्थिति बेहतर बन सके वैश्वीकरण से होने वाली दुष्प्रवृतियों को रोका तो नहीं जा सकता लेकिन इन प्रवृत्तियों को समझने इन्हें विश्लेषित करने तथा संचालित करने के प्रयास किए जाने चाहिए जिससे समाज में कमजोर वर्गों और विशेषकर महिलाओं पर होने वाले दुष्प्रभावो को सीमित व नियंत्रित किया जा सके। ऐसी नीतियां बनाई जाए जो नारी की कार्य क्षमता को बढ़ाएं और उसे वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव का सामना करने योग्य बनाया सके। नारी को रोजगार के समान अवसर, व्यापार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, बाजार व्यवस्था, समान कार्य के लिए समान वेतन आदि करके हमें रोजगार की नीतियों में सुधार करना होगा जिससे नारी को उचित लाभ मिल सके और वह आत्मनिर्भर बनकर विकास में अपना योगदान दे सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्वामी भगवती, सविता किशोर, महिला सशक्तिकरण क्यों और कैसे आर बी एस ए पब्लिशर्स, जयपुर
2. दत्त एंव सुन्दरम एस चन्द : भारतीय अर्थव्यवस्था
3. पाण्डेय, तेजस्कर, संगीता पाण्डेय, भारत में सामाजिक समस्याएं, नई दिल्ली, टाटा मैक्ग्रा हिल एजूकेशन प्रा. लि.
4. दाधीच, नरेश समसामयिक राजनीतिक सिद्वान्त, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स
5. विजय लक्ष्मी, महिला सशक्तीकरण की कुछ कोशिशे कुरुक्षेत्र पत्रिका, मार्च
6. चंदन, संजीवः महिला आरक्षण : मार्ग और मुश्किलें
7. पाण्डेय, प्रतिभा, भारतीय स्त्री दशा और दिशा, योजना पत्रिका, फरवरी
8. साधना आर्य, निवेदिता मेनन व जिनी लोकनीता सम्पादक – नारीवादी राजनीति : संघर्ष एंव मुददे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविधालय, नई दिल्ली